# आधुनिक हिंदी रंगमंच और हिंदी नाट्य साहित्य

सिद्धि शिरोडकर

स्वामी ब्रह्मानंद महाविद्यालय, कुंवारी, गोवा.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263579

## ABSTRACT:

यह आलेख आधुनिक हिंदी रंगमंच और नाट्य साहित्य पर लिखा है। इसमें बताया गया है कि कैसे पारंपरिक नाट्य शैलियाँ जैसे रासलीला और नौटंकी से हटकर, आधुनिक रंगमंच ने पाश्चात्य शैलियों को अपनाया। भारत में आधुनिक रंगमंच की शुरुआत अंग्रेजों के आगमन से हुई, जिन्होंने अपने मनोरंजन के लिए थिएटर स्थापित किए। इस यात्रा में भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य का जनक माना जाता है। उनके नाटकों ने नाटक को मनोरंजन से ऊपर उठाकर सामाजिक और राजनीतिक चेतना का माध्यम बनाया। बाद में, मोहन राकेश के नाटकों ने मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद को और धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' ने काव्यात्मक व प्रतीकात्मकता को मंच पर उतारा। इस तरह, इन नाटककारों ने हिंदी रंगमंच को एक नई पहचान दी और उसे समाज का दर्पण बनाया।

## KEYWORDS:

आधुनिक रंगमंच, हिंदी नाट्य साहित्य, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण लाल।

## प्रस्तावना:

आधुनिक रंगमंच का सीधा संबंध तीन प्रमुख परंपराओं से है: संस्कृत रंगमंच, लोक रंगमंच और पाश्चात्य रंगमंच। इनमें से पाश्चात्य रंगमंच को आधुनिक भारतीय रंगमंच का प्रमुख आधार माना जाता है। भारत में इसकी शुरुआत अंग्रेजों के आगमन के बाद हुई। उन्होंने अपने मनोरंजन के लिए बड़े शहरों में थिएटर बनाए, जिसने धीरेधीरे आधुनिक भारतीय नाट्य आंदोलन की नींव रखी।

आधुनिक रंगमंच का मतलब है, भारतीय नाट्य कला में 19वीं सदी के अंत में आए वे बदलाव, जिन्होंने नाटकों को पारंपरिक शैली से बाहर निकालकर यथार्थवाद और सामाजिक विषयों से जोड़ा। इसने

पारंपरिक नाट्य शैलियों, जैसे नौटंकी, रासलीला और जात्रा से हटकर पश्चिमी रंगमंच की तकनीकों को अपनाया। इसका मुख्य उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की समस्याओं, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय भावनाओं को गहराई से दिखाना था।

आधुनिक रंगमंच पर वास्तविक जीवन की घटनाओं और समस्याओं को दर्शाया जाने लगा। मंच पर सेट, वेशभूषा और संवाद सब कुछ असली दुनिया की तरह लगने लगे। नाटकों का केंद्र राजारानी या देवीदेवता नहीं, बल्कि आम आदमी का जीवन और उसकी समस्याएँ थीं, जैसे गरीबी, शिक्षा की कमी, महिला उत्पीड़न और भ्रष्टाचार। संवादों को बोलचाल की भाषा के करीब रखा गया। इस यात्रा में कई हिंदी नाटककारों और उनके नाटकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिनमें आधुनिक नाटक के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चंद्र, साथ ही मोहन राकेश, जयशंकर प्रसाद, धर्मवीर भारती और लक्ष्मीनारायण लाल जैसे प्रमुख नाम शामिल हैं।

**आधुनिक रंगमंच की विशेषताएँ:**

आधुनिक रंगमंच समकालीन सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को दर्शाने का एक प्रभावी माध्यम है। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि दर्शकों के साथ संवाद स्थापित करना है। आधुनिक नाटक दर्शकों को सवाल पूछने और उन पर एक गहरी छाप छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। नाटक की सफलता में संवादों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही वजह है कि नाटक की रचनात्मक भाषा रंगमंच से अलग नहीं, बल्कि उसके साथ मिलकर काम करती है।

उदाहरण के लिए, भारतेन्दु द्वारा 19वीं सदी में लिखा गया 'भारत दुर्दशा' आज भी आधुनिक रंगमंच के लिए प्रासंगिक है। आज के निर्देशक इस क्लासिक नाटक को नए और समकालीन तरीकों से प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह आज के दर्शकों के लिए भी प्रभावशाली बना रहे। इसमें वर्णित भ्रष्टाचार, सामाजिक फूट और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। आधुनिक निर्देशक इस नाटक को केवल पारंपरिक शैली में ही नहीं, बल्कि नुक्कड़ नाटक और प्रयोगात्मक रंगमंच जैसी शैलियों में भी मंचित करते हैं, जिससे इसका संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचता है।

आज के रंगमंच में तकनीकी साधनों, जैसे प्रकाश, ध्वनि और डिजिटल प्रोजेक्शन का उपयोग होता है। ये तकनीकें नाटक के प्रतीकात्मक और भावनात्मक पहलुओं को गहराई से उभारती हैं, जिससे दर्शकों पर इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। आधुनिक निर्देशक पात्रों को केवल ऐतिहासिक रूप में नहीं, बल्कि आज के समाज में मौजूद शक्तियों और कमजोरियों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

**भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिंदी नाट्य साहित्य:**

आधुनिक रंगमंच और हिंदी नाट्य साहित्य का विकास भारतेन्दु हरिश्चंद्र से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस दौर में संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया गया और साथ ही मौलिक नाटकों की रचना भी हुई। भारतेन्दु ने नाटक को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना, बल्कि उसे जनता से जोड़कर एक नया सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य दिया। उन्होंने नाटकों के माध्यम से लोगों में देशप्रेम और आत्मविश्वास की भावना जगाने का प्रयास किया।

भारतेन्दु के नाटक, जैसे 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी', समाज की कुरीतियों, भ्रष्टाचार और राजनीतिक विडंबनाओं को दर्शाते हैं। ये नाटक समाज को एक आईना दिखाते हैं। 'भारत दुर्दशा' इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने रंगमंच को मनोरंजन से आगे बढ़ाकर सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाने का एक सशक्त माध्यम बनाया। इस नाटक की यथार्थवादी शैली ने भविष्य के हिंदी रंगमंच को एक नई दिशा दी।

**मोहन राकेश और हिंदी नाट्य साहित्य:**

मोहन राकेश के नाटक, जैसे 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधेअधूरे', ने आधुनिक नाटक को एक नई दिशा दी। उनके नाटक अस्तित्ववादी संकट, मानवीय संबंधों की जटिलता और व्यक्ति के अकेलेपन को दर्शाते हैं। 'आधेअधूरे' आधुनिक शहरी परिवार के विघटन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यह नाटक तत्कालीन समाज में मध्यवर्गीय परिवार की टूटन को दिखाता है। इसमें रिश्तों की जटिलताएँ, आर्थिक दबाव और पुरुषस्त्री के बीच के तनाव को बहुत गहराई से दर्शाया गया है। पारंपरिक नाटकों के

विपरीत, इसमें कोई आदर्शवादी या ऐतिहासिक कहानी नहीं है, बल्कि यह सीधेसीधे आज के जीवन की सच्चाइयों से जुड़ा है।

इस नाटक के पात्र अधूरे हैं; कोई भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है। सावित्री, जो अपने परिवार के लिए कमाती है, अपने जीवन में एक 'संपूर्ण पुरुष' की तलाश में है। वहीं, महेंद्रनाथ, एक असफल पति और पिता, अपनी पहचान खो चुका है। मोहन राकेश ने पात्रों के बाहरी जीवन के साथसाथ उनके मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को भी मंच पर उतारा। यह आधुनिक रंगमंच की एक प्रमुख विशेषता है, जहाँ पात्रों की आंतरिक दुनिया को भी महत्व दिया गया है।

इस नाटक का मंचन बहुत ही अनूठा है। एक ही पुरुष कलाकार चार अलगअलग भूमिकाएँ निभाता है (पुरुष १, पुरुष २, पुरुष ३ और जगमोहन)। यह दर्शाता है कि एक आदर्श पुरुष की तलाश में सावित्री को हर जगह आधेअधूरे लोग ही मिलते हैं। 'आधेअधूरे' ने हिंदी रंगमंच को मनोरंजन से निकालकर एक विचारमंथन का माध्यम बनाया। इसने दिखाया कि आम जीवन की कहानियाँ भी उतनी ही शक्तिशाली और प्रासंगिक हो सकती हैं जितनी ऐतिहासिक या पौराणिक कथाएँ।

**धर्मवीर भारती के नाटकों में प्रतीकात्मकता और गीतात्मकता:**

धर्मवीर भारती का 'अंधा युग' आधुनिक हिंदी रंगमंच के इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह सिर्फ एक नाटक नहीं, बल्कि एक गीतिनाट्य है जो महाभारत युद्ध के अंतिम दिन की कहानी के माध्यम से आधुनिक मानव की त्रासदी और अस्तित्ववादी संकट को दर्शाता है। इसने हिंदी रंगमंच को एक नई दिशा दी और उसे पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकाला।

यह नाटक महाभारत की पौराणिक कहानी को आज के संदर्भ में देखता है। यह दिखाता है कि युद्ध के बाद का अँधेरा, जिसमें सारे मूल्य नष्ट हो जाते हैं, सिर्फ महाभारत काल में नहीं, बल्कि हर युग में मौजूद होता है। पात्रों के माध्यम से अंधविश्वास, सत्ता का लालच, हिंसा और नैतिकता के पतन जैसे सार्वभौमिक विषयों को उठाया गया है।

'अंधा युग' एक गीतिनाट्य है, जिसमें संवाद कविता के रूप में हैं। यह पारंपरिक भारतीय काव्यनाट्य परंपरा को आधुनिक रंगमंच के साथ

जोड़ता है। इसके मंचन में कविता की लय, संगीत और गायन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सिर्फ संवादों पर आधारित नहीं, बल्कि एक संपूर्ण ऑडियोविजुअल अनुभव है।

नाटक में कई प्रतीक हैं जो गहरा अर्थ रखते हैं। 'अँधा युग' खुद अंधकार, अज्ञान और विवेकहीनता का प्रतीक है। गांधारी का अंधापन, धृतराष्ट्र का अंधापन और अश्वत्थामा का शाप भी मानवीय त्रासदी और नैतिक पतन के प्रतीक हैं। रंगमंच पर इन प्रतीकों को दिखाने के लिए विशेष प्रकाश व्यवस्था और मंच सज्जा का प्रयोग किया जाता है। 'अंधा युग' ने साबित कर दिया कि आधुनिक रंगमंच केवल सामाजिक यथार्थवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि पौराणिक कथाओं, प्रतीकात्मकता और काव्यात्मकता को मिलाकर भी दर्शकों के साथ गहराई से जुड़ सकता है।

**निष्कर्ष:**

निष्कर्ष के तौर पर, आधुनिक हिंदी रंगमंच की यात्रा भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटकों से शुरू हुई, जिन्होंने सामाजिक चेतना जगाई। मोहन राकेश ने इसे मनोवैज्ञानिक गहराई दी और धर्मवीर भारती ने 'अंधा युग' जैसे गीतिनाट्यों के माध्यम से काव्यात्मक और प्रतीकात्मकता की नई राहें खोलीं। इन सभी नाटककारों और नाटकों ने मिलकर हिंदी रंगमंच को केवल मनोरंजन का साधन न बनाकर, समाज का एक सशक्त दर्पण बनाया।

**Funding:**
This study was not funded by any grant.

**Conflict of interest:**

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

**About the License:**

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.